"शब्द शक्ति : स्वरूप एवं भेद"

शब्द शक्ति का अर्थ है— शब्द की अभिव्यंजक शक्ति। शब्द की शक्ति असीम है। शब्द उच्चारण के साथ ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव डालता है। जैसे आचार या चटनी का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आता है। भूत या साँप शब्द का उच्चारण करते ही मन में भय का संचार होता है। अतः जिस शक्ति के द्वारा शब्द का अर्थगत प्रभाव पड़ता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। अर्थात् शब्द के अर्थ का बोध कराने वाले अर्थ-व्यापार को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द का कार्य किसी अर्थ की प्रतीति, व्यक्ति तथा उसका बोध कराना होता है। इस प्रकार शब्द में अर्थ का अभिन्न सम्बन्ध होता है। शब्द एवं अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द शक्ति है। इसको दूसरे शब्दों में कहे तो कहा जा सकता है कि शब्द या शब्द के समूह में जो अर्थ छिपा होता है, उसे प्रकाशित करने वाली शक्ति का नाम शब्द शक्ति है। शब्द से अर्थ का बोध होता है। इसलिए शब्द को 'बोधक' अर्थात् (बोध कराने वाला) और अर्थ को 'बोध्य' अर्थात् (जिसका बोध कराया जाये) कहा जाता है।

शब्द शक्ति का भारतीय साहित्यशास्त्र में बड़ा ही वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। जिसके आधार पर शब्द के तीन प्रकार बताए गए हैं— (i) वाचक, (ii) लक्षक एवं (iii) व्यंजक, इन्हीं शब्दों

के अनुरूप ही तीन प्रकार के अर्थ होते हैं— वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ। इन अर्थों का बोध शब्द शक्तियों द्वारा होता है, दूसरे शब्दों में कहें तो कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्द से जो अर्थ निकलता है, उसका बोध कराने वाली शक्ति 'शब्द शक्ति' कहलाती है। इस प्रकार शब्द शक्तियों के तीन भेद हुए — 1. अभिधा शब्द शक्ति, 2. लक्षणा शब्द शक्ति एवं 3. व्यंजना शब्द शक्ति।

1. अभिधा शब्द शक्ति —

अभिधा वाच्यार्थ पर आधारित शब्द शक्ति है। अभिधा वह शब्द शक्ति है या शब्द का व्यापार है, जिसमें साक्षात् संकेतित या मुख्य अर्थ का बोध होता है। मुख्य या प्रथम अर्थ का बोध कराने के कारण इस अभिधा शक्ति को मुख्या या अभिमा भी कहते हैं। जिस शब्द से मुख्य मुख्य का बोध होता है, वह वाचक कहलाता है तथा उससे निकलने वाला मुख्यार्थ वाच्यार्थ होता है। इसे सरल शब्दों में कहें तो कहा जा सकता है कि शब्द को सुनते ही अपना पढ़ते ही श्रोता या पाठक उसके सबसे सरल, प्रचलित अर्थ को बिना कानरोध के ग्रहण करता है, वह अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है। दूसरे शब्दों में शब्द की जिस शक्ति से उसके संकेतित (निर्दिष्ट) अर्थ का बोध हो, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। अभिधा शब्द का पहला व्यापार है। अभिधा शब्द शक्ति के कुछ उदाहरण —

(i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी अब राजती,
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा॥

(iii) निज गौरव का नित ज्ञान रहे, हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
सब जाय अभी पर मान रहे, मरणोत्तर गुंजित गान रहे।

उपर्युक्त पंक्तियों में अर्थ ग्रहण में किसी प्रकार का अवरोध नहीं है। परम्परा, कोश, व्याकरण आदि से यह अर्थ पूर्वविदित (पहले से मालूम) है। अतः यहाँ अभिधा शब्द शक्ति है। अभिधा शब्द शक्ति के द्वारा जिन शब्दों की अर्थाभिव्यक्ति होती है, वे तीन प्रकार के होते हैं—

(i) रूढ़ — ये शब्द जातिवाचक होते हैं। रूढ़ शब्द वे होते हैं, जिनकी कोई व्युत्पत्ति नहीं होती है- जैसे – गढ़, घर, पेड़, चन्द्र, घोड़ा, बालक, हाथी, बंदर, पशु आदि।

(ii) यौगिक — वैसे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति हो सकती है अर्थात् जो प्रकृति और प्रत्यय के योग से बनते हैं। उनमें अवयवार्थ सहित समुदायार्थ का बोध होता है। जैसे — तरुजीवी, पशुतुल्य, पाचक, नरपति, घटक, आदि।

(iii) योगरूढ़ — योगरूढ़ वे शब्द हैं, जो यौगिक होते हैं; फिर उनका अर्थ रूढ़ होता है। अर्थात् प्रकृति और प्रत्यय का अलग-अलग अर्थ तो निकलता है, परन्तु उससे शब्द का वास्तविक अर्थ न निकलकर एक विशिष्ट अर्थ निकलता

है, जैसे — पंकज, जलज, पशुपति, चन्द्रमौलि, पयोधि, चक्रधर आदि

2. लक्षणा शब्द शक्ति —

मुख्यार्थ या वाच्यार्थ में बाधा या व्याघात के होने पर रूढि या प्रयोजन के सहारे, उससे सम्बन्धित जहाँ पर दूसरा अर्थ लक्षित होता है, वहाँ पर लक्षणा शब्द शक्ति होती है। अर्थात् मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि (लोक प्रसिद्ध) या प्रयोजन (उद्देश्य) के कारण, जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ की प्राप्ति हो, उस शब्द शक्ति को लक्षणा कहा जाता है। सामान्य अर्थों में-जहाँ शब्दों के मुख्य अर्थ को बाधित कर परम्परा या लक्षणों के आधार पर अन्य अर्थ को ग्रहण किया जाता है, उसे 'लक्षणा' कहते हैं। लक्षणा मुख्यार्थ का व्यापार है। इसमें शब्द और लक्षण का सीधा सम्बन्ध नहीं होता। इनके बीच वाच्यार्थ स्थित रहती है। इसलिए लक्षणा शब्द शक्ति के तीन निमित्त हैं — (i) मुख्यार्थ या वाच्यार्थ की बाधा (ii) रूढि या प्रयोजन और (iii) मुख्यार्थ योग अर्थात् उससे सम्बन्धित अन्य अर्थ। जैसे — 'लड़का शेर है' से डाला लक्ष्यार्थ होगा लड़का निडर है। उसी तरह दूसरा उदाहरण — 'मेरा कुत्ता शेर का चाचा है।' यहाँ मुख्यार्थ बाधित है। कुत्ता शेर का चाचा कैसे हो सकता है? किसी प्रयोजन के सहारे यह अर्थ निकला कि मेरा कुत्ता आवाज और भयंकरता में शेर से कम है। यहाँ दोनों उदाहरण में शेर का अर्थ अभीष्ट नहीं है।

रूढ़ि और प्रयोजन के आधार पर लक्षणा

शब्द शक्ति के दो भेद होते हैं —

(i) रूढ़ि लक्षणा —

मुख्यार्थ को छोड़कर जहाँ रूढ़ि (लोक प्रसिद्ध) या प्रचलन के कारण अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, वहाँ रूढ़ि लक्षणा होती है, जैसे —

"प्रीति करि काहू सुख न लह्यो
प्रीति पतंग करी दीपक सों आपुहि प्रान दह्यो।"

प्रस्तुत उदाहरण में गोपियाँ दीपक - पतंगा के पारम्परिक उदाहरण को निजी प्रेम की पीड़ा में व्यक्त कर रही हैं।

(ii) प्रयोजनवती लक्षणा —

विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए, जहाँ लक्षणा की जाती है, वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा होती है, जैसे —

"रो-रोकर सिसक-सिसककर, कहता मैं करुण कहानी।
तुम सुमन नोचते सुनते, करते जानी अनजानी।"

3. व्यंजना शब्द शक्ति —

व्यंजना का शाब्दिक अर्थ है - विशेष रूप से स्पष्ट करना, खोलना या विकसित करना। अभिधा और लक्षणा शब्दशक्तियों के अपना अर्थबोध कराने के बाद जिस शक्ति से अन्य अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। ऐसे शब्द को व्यंजक और अर्थ को व्यंग्यार्थ कहा जाता है। शब्द के जिस व्यापार से मुख्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं। व्यंजना शब्द शक्ति से अन्यार्थ या विशेषार्थ का ज्ञान

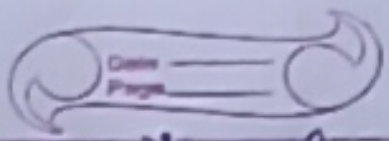

कराने वाला शब्द व्यंजक कहलाता है, जबकि उस व्यंग्य शब्द से प्राप्त अर्थ को व्यंग्यार्थ या ध्वन्यार्थ कहते हैं। व्यंजना शब्द शक्ति द्वारा अर्थ की प्रतीति कराने के लिए ध्वन्यार्थ, सूच्यार्थ, प्रतीयमानार्थ, आक्षेपार्थ आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं।

नोट — जहाँ अभिधा तथा लक्षणा शब्द शक्ति केवल अर्थ पर आधारित होते हैं, वहीं व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित होता है। जब तक अभिधा लक्षणा अपना काम करके विरत नहीं हो जाते, तब तक व्यंजना का काम आरम्भ ही नहीं होता।

जैसे — 'गंगा में गाँव।' इसका अर्थ देने में अभिधा असमर्थ है, क्योंकि गंगा में गाँव नहीं हो सकता है। लक्षणा से अर्थ निकला कि गंगा के समीप गाँव। परन्तु इसके बाद भी इसका अर्थ 'पवित्र, शीतल गाँव है' यह व्यंजना शक्ति के द्वारा ही सम्भव है।

व्यंजना शब्द शक्ति के दो भेद हैं — शाब्दी व्यंजना और आर्थी व्यंजना।